INDIAN STREAMS RESEARCH JOURNAL
ISSN NO : 2230-7850
IMPACT FACTOR : 5.1651 (UIF)
VOLUME - 15 | ISSUE - 12 | JANUARY – 2026

"दो वर्षीय बी.एड. कार्यक्रम के प्रति प्रशिक्षुओं के दृष्टिकोण का मनोवैज्ञानिक विश्लेषण"

रजनी कान्त श्रीवास्तव
शोधार्थी शिक्षा, लाइफ लाँग लर्निंग विभाग,
अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय, रीवा (म.प्र.)

डॉ. अरुण कुमार सिंह
प्राचार्य
टाटा एजुकेशन कालेज, सगरा, जिला रीवा (म.प्र.)

सारांश –

शिक्षक शिक्षा किसी भी राष्ट्र की शिक्षा व्यवस्था की गुणवत्ता का आधार होती है। प्रभावी शिक्षक निर्माण के लिए आवश्यक है कि प्रशिक्षण कार्यक्रम केवल सैद्धांतिक न होकर मनोवैज्ञानिक दृष्टि से भी प्रशिक्षुओं के व्यक्तित्व और दृष्टिकोण का विकास करें। इसी संदर्भ में बी.एड. कार्यक्रम की अवधि को एक वर्ष से बढ़ाकर दो वर्ष किया गया, ताकि प्रशिक्षुओं को अधिक समय, अनुभव और व्यावहारिक दक्षताएँ प्राप्त हो सकें। प्रस्तुत शोध–पत्र का उद्देश्य दो वर्षीय बी.एड. कार्यक्रम के प्रति प्रशिक्षुओं के दृष्टिकोण का मनोवैज्ञानिक विश्लेषण करना है। यह अध्ययन द्वितीयक आँकड़ों पर आधारित है, जिसमें शिक्षक शिक्षा से संबंधित पुस्तकों, शोध–पत्रों, नीतिगत दस्तावेजों और रिपोर्टों का विश्लेषण किया गया है। अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि दो वर्षीय बी.एड. कार्यक्रम ने प्रशिक्षुओं में आत्मविश्वास, शिक्षण कौशल, सामाजिक संवेदनशीलता और व्यावसायिक दृष्टिकोण के विकास में सकारात्मक भूमिका निभाई है। विस्तारित अवधि के कारण प्रशिक्षुओं को विषयगत अध्ययन, शिक्षण अभ्यास, विद्यालयी अनुभव और आत्ममूल्यांकन के अधिक अवसर प्राप्त होते हैं। हालाँकि कुछ मनोवैज्ञानिक चुनौतियाँ भी सामने आती हैं, जैसे पाठ्यक्रम का दबाव, आर्थिक चिंताएँ, तथा संसाधनों की कमी से उत्पन्न तनाव। अध्ययन के निष्कर्ष बताते हैं कि यदि पाठ्यक्रम में परामर्श सेवाएँ, प्रेरक गतिविधियाँ और सहायक अधिगम वातावरण को सुदृढ़ किया जाए, तो प्रशिक्षुओं के दृष्टिकोण में और अधिक सकारात्मक परिवर्तन संभव है। इस प्रकार दो वर्षीय बी.एड. कार्यक्रम शिक्षक शिक्षा की गुणवत्ता सुधारने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है।

मुख्य शब्द : बी.एड. कार्यक्रम, प्रशिक्षु, दृष्टिकोण, मनोवैज्ञानिक विश्लेषण, शिक्षक शिक्षा, व्यावसायिक विकास।

प्रस्तावना –

शिक्षा मानव समाज के विकास का मूल आधार है और शिक्षक इस प्रक्रिया का केन्द्रीय घटक होता है। किसी भी राष्ट्र की शिक्षा व्यवस्था की गुणवत्ता उस देश के शिक्षकों की दक्षता, दृष्टिकोण और व्यक्तित्व पर निर्भर करती है। इसलिए शिक्षक शिक्षा को शिक्षा प्रणाली का सबसे महत्वपूर्ण अंग माना जाता है। शिक्षक केवल ज्ञान का संप्रेषक ही नहीं होता, बल्कि वह विद्यार्थियों के बौद्धिक, भावनात्मक और सामाजिक विकास का

मार्गदर्शक भी होता है। आधुनिक शिक्षा व्यवस्था में शिक्षण केवल विषय–वस्तु के संप्रेषण तक सीमित नहीं है, बल्कि यह एक मनोवैज्ञानिक प्रक्रिया भी है, जिसमें शिक्षक और विद्यार्थी के बीच प्रभावी अंतःक्रिया आवश्यक होती है। इसी कारण शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रमों में मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण का विशेष महत्व है। प्रशिक्षुओं की धारणाएँ, रुचियाँ, अभिप्रेरणाएँ और भावनात्मक संतुलन उनके शिक्षण व्यवहार को प्रभावित करते हैं।

भारत में शिक्षक शिक्षा के क्षेत्र में समय–समय पर सुधार किए गए हैं। इन्हीं सुधारों में बी.एड. कार्यक्रम की अवधि को एक वर्ष से बढ़ाकर दो वर्ष करना एक महत्वपूर्ण कदम माना जाता है। इस परिवर्तन का उद्देश्य प्रशिक्षुओं को अधिक समय देकर उन्हें सैद्धांतिक ज्ञान के साथ–साथ व्यावहारिक अनुभव और मनोवैज्ञानिक परिपक्वता प्रदान करना था। एक वर्षीय पाठ्यक्रम में समय की कमी के कारण प्रशिक्षुओं को शिक्षण कौशल, कक्षा प्रबंधन और विद्यालयी अनुभव का पर्याप्त अवसर नहीं मिल पाता था। दो वर्षीय बी.एड. कार्यक्रम की संरचना इस प्रकार की गई है कि इसमें सैद्धांतिक अध्ययन, प्रायोगिक कार्य, विद्यालयी अनुभव, समावेशी शिक्षा, सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी तथा जीवन कौशल जैसे विषयों को शामिल किया गया है। इस पाठ्यक्रम का उद्देश्य प्रशिक्षुओं में आत्मविश्वास, सृजनात्मकता, सहानुभूति और व्यावसायिक प्रतिबद्धता का विकास करना है। मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण से देखा जाए तो प्रशिक्षुओं का दृष्टिकोण उनके व्यवहार, निर्णय और शिक्षण शैली को प्रभावित करता है। यदि प्रशिक्षु अपने प्रशिक्षण कार्यक्रम के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण रखते हैं, तो वे अधिक सक्रिय, प्रेरित और प्रभावी शिक्षक बन सकते हैं। इसके विपरीत, नकारात्मक दृष्टिकोण उनके आत्मविश्वास, रुचि और प्रदर्शन को प्रभावित कर सकता है।

दो वर्षीय बी.एड. कार्यक्रम ने प्रशिक्षुओं को अधिक समय और अनुभव प्रदान किया है, जिससे उनके मनोवैज्ञानिक विकास में सकारात्मक परिवर्तन संभव हुआ है। विद्यालयी अनुभव कार्यक्रमों के माध्यम से प्रशिक्षु वास्तविक कक्षा परिस्थितियों में शिक्षण का अभ्यास करते हैं, जिससे उनमें आत्मविश्वास और संप्रेषण कौशल का विकास होता है। इसके अतिरिक्त, समूह गतिविधियाँ, प्रायोगिक कार्य और प्रस्तुतियाँ उनके सामाजिक कौशल और नेतृत्व क्षमता को विकसित करती हैं। हालाँकि इस कार्यक्रम के क्रियान्वयन में कुछ मनोवैज्ञानिक चुनौतियाँ भी सामने आती हैं। पाठ्यक्रम की अवधि बढ़ने से आर्थिक बोझ बढ़ता है, जिससे कुछ प्रशिक्षुओं में तनाव और चिंता उत्पन्न होती है। इसके अतिरिक्त, कुछ शिक्षा महाविद्यालयों में संसाधनों की कमी, अत्यधिक असाइनमेंट, और प्रायोगिक कार्यों की औपचारिकता भी प्रशिक्षुओं के मनोबल को प्रभावित करती है।

इस प्रकार यह आवश्यक हो जाता है कि दो वर्षीय बी.एड. कार्यक्रम के प्रति प्रशिक्षुओं के दृष्टिकोण का मनोवैज्ञानिक विश्लेषण किया जाए। प्रशिक्षुओं की धारणाएँ और अनुभव इस कार्यक्रम की वास्तविक प्रभावशीलता को समझने में सहायक होते हैं। यदि उनके दृष्टिकोण का अध्ययन किया जाए, तो पाठ्यक्रम में आवश्यक सुधार किए जा सकते हैं और प्रशिक्षण प्रक्रिया को अधिक प्रभावी बनाया जा सकता है। अतः प्रस्तुत शोध–पत्र का उद्देश्य दो वर्षीय बी.एड. कार्यक्रम के प्रति प्रशिक्षुओं के दृष्टिकोण का मनोवैज्ञानिक विश्लेषण करना है, जिससे शिक्षक शिक्षा के क्षेत्र में सुधार के लिए उपयोगी सुझाव प्राप्त हो सकें।

शोध अध्ययन के उद्देश्य –

शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रमों की सफलता का एक महत्वपूर्ण संकेतक प्रशिक्षुओं का दृष्टिकोण होता है। यदि प्रशिक्षु प्रशिक्षण कार्यक्रम को उपयोगी, प्रासंगिक और प्रेरणादायक मानते हैं, तो उनके शिक्षण व्यवहार और व्यावसायिक दक्षताओं में सकारात्मक परिवर्तन देखा जा सकता है। दो वर्षीय बी.एड. कार्यक्रम का उद्देश्य प्रशिक्षुओं को अधिक समय, अनुभव और मनोवैज्ञानिक परिपक्वता प्रदान करना है, ताकि वे प्रभावी शिक्षक बन सकें। किंतु इस कार्यक्रम की वास्तविक प्रभावशीलता का आकलन तभी संभव है, जब प्रशिक्षुओं की धारणाओं और अनुभवों का विश्लेषण किया गया है। प्रस्तुत शोध अध्ययन के उद्देश्य निम्नलिखित प्रस्तुत किये गये हैं, जो इस प्रकार है –

- दो वर्षीय बी.एड. कार्यक्रम के प्रति प्रशिक्षुओं के दृष्टिकोण का अध्ययन करना।
- प्रशिक्षुओं के मनोवैज्ञानिक विकास पर कार्यक्रम के प्रभाव का विश्लेषण करना।
- प्रशिक्षुओं द्वारा अनुभव की गई मनोवैज्ञानिक समस्याओं और सुधार संबंधी सुझावों का अध्ययन करना।

उक्त उद्देश्यों को दृष्टिगत रखते हुए शोध पत्र को वास्तविक मानकों के अनुरूप पूर्ण करने का सार्थक प्रयास किया गया है।

शोध विधि –

प्रस्तुत अध्ययन वर्णनात्मक एवं विश्लेषणात्मक प्रकृति का है तथा यह पूर्णतः द्वितीयक आँकड़ों पर आधारित है। अध्ययन के लिए शिक्षक शिक्षा और शैक्षिक मनोविज्ञान से संबंधित पुस्तकों, शोध–पत्रों, जर्नलों, सरकारी रिपोर्टों और नीतिगत दस्तावेजों का चयन किया गया है। इन स्रोतों से प्राप्त जानकारी का व्यवस्थित संकलन कर प्रशिक्षुओं के दृष्टिकोण से संबंधित निष्कर्षों का विश्लेषण किया गया है। द्वितीयक आँकड़ों के विश्लेषण में तुलनात्मक एवं व्याख्यात्मक पद्धति अपनाई गई, जिससे विभिन्न अध्ययनों के परिणामों का समन्वित विश्लेषण प्रस्तुत किया जा सके। इस प्रक्रिया में प्रशिक्षुओं की संतुष्टि, आत्मविश्वास, प्रेरणा स्तर, तनाव, और व्यावसायिक दृष्टिकोण जैसे मनोवैज्ञानिक पहलुओं को ध्यान में रखा गया है। इस प्रकार यह अध्ययन गुणात्मक दृष्टिकोण पर आधारित है।

विश्लेषण –

दो वर्षीय बी.एड. कार्यक्रम के प्रति प्रशिक्षुओं के दृष्टिकोण का मनोवैज्ञानिक विश्लेषण करने पर यह स्पष्ट होता है कि इस कार्यक्रम ने प्रशिक्षुओं के व्यक्तित्व और व्यावसायिक दृष्टिकोण के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। विस्तारित अवधि के कारण प्रशिक्षुओं को विषय–वस्तु की गहन समझ विकसित करने का अवसर मिलता है, जिससे उनके आत्मविश्वास में वृद्धि होती है। प्रशिक्षुओं के दृष्टिकोण से विद्यालयी अनुभव कार्यक्रम अत्यंत महत्वपूर्ण पाया गया है। इस कार्यक्रम के माध्यम से प्रशिक्षु वास्तविक कक्षा परिस्थितियों में शिक्षण का अभ्यास करते हैं, जिससे उनके संप्रेषण कौशल, कक्षा प्रबंधन क्षमता और आत्मविश्वास में सकारात्मक परिवर्तन होता है।

मनोवैज्ञानिक दृष्टि से यह देखा गया है कि दो वर्षीय कार्यक्रम प्रशिक्षुओं को आत्ममूल्यांकन और आत्मचिंतन के लिए पर्याप्त समय प्रदान करता है। इससे उनमें आत्मनियंत्रण, धैर्य और समस्या–समाधान कौशल का विकास होता है। समूह कार्य, सेमिनार और प्रायोगिक गतिविधियाँ उनके सामाजिक कौशल और नेतृत्व क्षमता को भी सुदृढ़ करती हैं। हालाँकि कुछ प्रशिक्षुओं ने कार्यक्रम से संबंधित मनोवैज्ञानिक चुनौतियों का भी उल्लेख किया है। पाठ्यक्रम की विस्तारित अवधि के कारण आर्थिक दबाव बढ़ता है, जिससे तनाव और चिंता की स्थिति उत्पन्न हो सकती है। इसके अतिरिक्त, अत्यधिक असाइनमेंट और प्रायोगिक कार्यों का दबाव भी मानसिक तनाव का कारण बनता है।

संसाधनों की कमी, योग्य संकाय का अभाव और प्रायोगिक कार्यों की औपचारिकता भी प्रशिक्षुओं की प्रेरणा को प्रभावित करती है। कुछ मामलों में प्रशिक्षु यह महसूस करते हैं कि प्रशिक्षण कार्यक्रम उनकी अपेक्षाओं के अनुरूप नहीं है, जिससे उनके दृष्टिकोण में नकारात्मकता आ सकती है। डिजिटल युग में तकनीकी साधनों का उपयोग प्रशिक्षुओं की प्रेरणा और रुचि को बढ़ाने में सहायक सिद्ध हो सकता है। यदि पाठ्यक्रम में सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी का समुचित समावेश किया जाए, तो प्रशिक्षु आधुनिक शिक्षण पद्धतियों को अधिक प्रभावी ढंग से अपनाने में सक्षम हो सकते हैं। कुल मिलाकर यह कहा जा सकता है कि दो वर्षीय बी.एड. कार्यक्रम प्रशिक्षुओं के मनोवैज्ञानिक विकास में सकारात्मक भूमिका निभाता है, किंतु इसके प्रभावी क्रियान्वयन के लिए आवश्यक संसाधनों और सहायक वातावरण की उपलब्धता सुनिश्चित करना आवश्यक है।

निष्कर्ष –

प्रस्तुत अध्ययन से यह निष्कर्ष निकलता है कि दो वर्षीय बी.एड. कार्यक्रम प्रशिक्षुओं के मनोवैज्ञानिक एवं व्यावसायिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। इस कार्यक्रम ने प्रशिक्षुओं को अधिक समय, गहन अध्ययन और व्यवहारिक अनुभव के अवसर प्रदान किए हैं, जिससे उनके आत्मविश्वास, संप्रेषण कौशल और शिक्षण दक्षता में वृद्धि हुई है। प्रशिक्षुओं की धारणाओं से यह स्पष्ट होता है कि वे इस कार्यक्रम को अपने व्यावसायिक विकास के लिए उपयोगी मानते हैं, विशेषकर विद्यालयी अनुभव और प्रायोगिक गतिविधियों के संदर्भ में। हालांकि, आर्थिक दबाव, संसाधनों की कमी और असाइनमेंट के बोझ जैसी समस्याएँ उनके मनोवैज्ञानिक संतुलन को प्रभावित करती हैं। यदि प्रशिक्षण संस्थानों में सहायक वातावरण, परामर्श सेवाएँ, डिजिटल संसाधन और व्यावहारिक गतिविधियों को सुदृढ़ किया जाए, तो प्रशिक्षुओं के दृष्टिकोण में और अधिक सकारात्मक परिवर्तन

संभव है। इस प्रकार दो वर्षीय बी.एड. कार्यक्रम शिक्षक शिक्षा की गुणवत्ता सुधारने की दिशा में एक प्रभावी कदम सिद्ध हो सकता है।

संदर्भ –

1. अग्रवाल, जे. सी. टीचर एजुकेशन इन इंडिया. नई दिल्ली : शिप्रा पब्लिकेशन्स, 2015
2. कौल, लोकेश. मेथडोलॉजी ऑफ एजुकेशनल रिसर्च. नई दिल्ली : विकास पब्लिशिंग हाउस, 2016
3. एनसीईआरटी. टीचर एजुकेशन एंड स्कूल एजुकेशन. नई दिल्ली : एनसीईआरटी, 2017
4. एनसीटीई. टीचर एजुकेशन रेगुलेशन्स. नई दिल्ली : एनसीटीई, 2018
5. सिंह, वाई. के. टीचर एजुकेशनः इश्यूज एंड पर्सपेक्टिव्स. नई दिल्ली : एपीएच पब्लिशिंग, 2019
6. कुमार, ए. कॉन्टेम्पररी ट्रेंड्स इन टीचर एजुकेशन. नई दिल्लीः विजडम प्रेस, 2020